सप्तम अध्याय

उपसंहार

उपसंहार

पद्मावत जायसी की अनुपम कीर्ति है। इसका अध्ययन इसके अनेक खण्डों को लेकर किया गया है। कभी संवेदना के पहलू को लेकर तो कभी भाषा के पहलू को लेकर। पद्मावत जायसी की कालजयी कृति है जो सर्वकालीन है। सर्जना का कभी अन्त नहीं होता उसी प्रकार आलोचना का भी कभी अन्त नहीं होता। जायसी के काव्य में सामाजिक जीवन और अध्यात्मक समवेत रूप में मिला हुआ है। जायसी लोक विश्रुत कथा का चयन करते हैं। करूणा विगलित भाव धारा कथा के लौकिक आयाम को लेकर अलौकिक बन जाती है। वे अपने काव्य में समाज के चित्र भी प्रस्तुत करते हैं जिसमें उसके अनेक स्तर बिम्बित होते हैं। जायसी के काव्य का निर्माण प्रेम की मूल धातु से होता है। यह प्रेम व्यक्ति के हृदय से समाज में अनंग की भांति फैल जाता हैं। उनके काव्य का सौन्दर्य प्रेम के आकाश में सप्तरंगी किरणों से बनी इन्द्रधनुष की भांति अनुरंजित होता है। यहां मन और हृदय का, हृदय और आत्मा का विराट समन्वय है इस समन्वय में समाज एवं अध्यात्म की अविरल अन्विति है। उनके काव्य की अनाविल कलाधरा आध्यात्मिकता की किरणें बिखेरतीं है। पद्मावत में मध्य काल संस्कृति का भव्य प्रकाशन है। आज के गत्यात्मक युग में भी कवि की जीवन दृष्टि की प्रासंगिकता विद्यमान है। जायसी के काव्य में संवेदना मूल रूप से सामाजिक है किन्तु उसमें आध्यात्मिकता का पुट इस प्रकार समाहित है कि दोनों का अलग–अलग मूल्यांकन कठिन ही यह सत्य है कि मानव एक मनोवैज्ञानिक प्राणी है किन्तु केवल मनोवैज्ञानिक की परिसीमा में उसका मूल्यांकन सम्भव नहीं है। भारतीय संस्कृति में त्याग और भोग के सामंजस्य का जो अद्भुत रूप है वह आज भी आकर्षण का विजय है। पद्मावत में राजा रत्नसेन की जिज्ञासा एवं पद्मावती के प्रेम का जो मर्मस्पर्शी चित्रण है वह साहित्य के लिए आज भी अध्ययन का विषय है। जायसी में अध्यात्म के साथ जो समाज का

निरुपण किया है वह उनके महान काव्य शक्ति का द्योतक है। सामाजिक संवेदना के बीच अध्यात्म की विद्युत चमकती है, कल्पना के काले मेघ भावाकाश को आच्छादित कर देते हैं फिर तो स्वर्णिय जलराशि पाठक को दिखाई देने लगती है उनके काव्य में कारूणिक व्यंजना एवं सघन विषाद की विवृत्ति हुई है। तत्वतः जायसी का काव्य निरन्तर अध्ययन का स्रोत बना हुआ है। प्रस्तुत शोध पद्मावत की संवेदना और काव्यभाषा को लेकर किया गया हैं। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है कि पद्मावत में सामाजिक भावों की विवृति हुई है साथ ही आध्यात्म का प्रकाश भी प्रकाशित हुआ है। पद्मावत एक साहित्यिक कृति है अतः उसमें से सामाजिक को अलग नहीं किया जा सकता इसके साथ यह भी विश्लेषणीय है कि पद्मावत के आध्यात्मिक पहले को नकार देने पर उसका काव्यात्मक वैभव क्षीण हो जाता है। मानव जीवन में विकास, सौन्दर्य एवं आनंद रचनात्मक कल्पना के सहारे प्राप्त होता है। इस रचनात्मक कल्पना में काव्यभाषा का अनुपम योगदान होता है। लोकशब्द कल्पना का उन्मेष पाकर साहित्यिक शब्द बन जाते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में संवेदना एवं काव्यभाषा का संतुलित अध्ययन है। इस शोध–प्रबन्ध : **"पद्मावत की संवेदना और काव्यभाषा : एक नई दृष्टि"** को सात भागों में बांटा गया हैं :

प्रथम अध्याय :

जायसी का रचनात्मक व्यक्तित्व के अंतर्गत पद्मावत के रचनाकाल का अन्वेषण किया गया है इस संदर्भ में अनेक विद्वानों के विचार प्रस्तुत किये गये हैं तथा देशकाल एवं जायसी के जीवनकाल की संगति में उसका निर्धारण किया गया है। इसी अध्याय के दूसरे खण्ड में जायसी की रचनाएं एवं कथावस्तु का अनुसंधान किया गया है अब तक जायसी की छः रचनाएं प्रकाश में आयी है – (1) 'पद्मावत' (2) 'अखरावट' (3) 'आखिरी कलाम' (4) 'चित्ररेखा' (5) 'मसला' (6) 'कहरनामा' जिसे डा0 माता प्रसाद गुप्त ने 'महरी बाईसी' कहा है। इसी खण्ड में पद्मावत की कथावस्तु का रेखांकन किया गया है।

द्वितीय अध्याय :

रचना दृष्टि और सर्जना के आयाम – इस अध्याय में वस्तुजगत यथाथीस्थिति तथा सामाजिक करूणा को स्पष्ट करने के बाद पद्मावत के महाकाव्यत्व पर प्रकाश डाला गया है। पद्मावत में वस्तुचित्रण, प्रकृतिचित्रण, नागमती वियोग ये ऐसे प्रकरण है जहां काव्य भी सामाजिक भूमि विकृत होती है। महाकाव्य के आयाम में ही तीनों की रचनात्मकता सार्थक होती है। पद्मावत की गणना हिन्दी के सर्वश्रेष्ठ काव्य के रूप में है। आचार्य शुक्ल ने 'रामचरितमानस' और 'पद्मावत' को एक़ साथ सर्वश्रेष्ठ काव्य कहा है। इस महाकाव्य की कथावस्तु ने चित्तौड़ के राजा रत्नसेन और सिघल द्वीप की राजकुमारी पद्मावती की प्रेम कथा वर्णित है। सम्पूर्ण काव्य की कथा दो भागों में विभाजित है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध की कथा लोकविश्रुल पद्मावती रानी की कहानी है उत्तरार्द्ध की कथा में अलाउद्दीन के आक्रमण, जौहर आदि ऐतिहासिक तथ्यों की छौंक देकर उसे ऐतिहासिक सी कथा बता देने का सफल प्रयत्न है। इसमें प्रासंगिक एवं आधिकारिक कथाओं की पूरी अन्विती विद्यमान है। पूरी कथा में प्रसंग की श्रृंखला बराबर लगी है कथा प्रवाह खण्डित नहीं है। इस कथा का नायक रत्नसेन बुद्धि, उत्साह, प्रज्ञा, शौर्य आदि से सम्पन्न है। पद्मावत में मुख्य रूप से आद्यन्त रति भाव की व्यंजना हुई है इसलिये इसमें श्रृंगार रस का प्राधान्य है। इसमें करूण, वीभत्स, वीर, शान्त आदि रसों का भी समावेश है। इसके आरम्भ और अन्त में शान्त रत्न का चित्रण है। विप्रलम्भ श्रृंगार में जायसी ने अपनी उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। रत्नसेन के चित्तौड़ से सिंघल की ओर विदा होते रस का संचार करता है। वस्तु जगत के चित्रण में जायसी अपनी असाधारण प्रतिभा का परिचय देते हैं। सिंहल द्वीप, जलक्रीड़ा, सिंहल द्वीप यात्रा, समुद्र, विवाह, नखशिख आदि का वर्णन भव्यतम रूप में हुआ है।

तृतीय अध्याय :

प्रेम साधना की व्यापक भूमिका में 'प्रेम की लौकिक भूमि' राजा रत्नसेन एवं पद्मावती का आकर्षण भरा प्रेम है जिसकी विवेचना कथा वस्तु में की गई है दूसरे खण्ड प्रेम के आध्यात्मिक चेतना का विवेचना जायसी के रहस्यवाद में किया गया है।

साधनात्मक रहस्यवाद को जायसी की एक बहुत बड़ी देन यह है कि उन्होंने इस शुष्क और योगमूलक साधनात्मक रहस्य भावना को अत्यन्त सरस और मधुर बनाया है। यह अवश्य है कि प्रसंग उपस्थित होने पर जायसी अपनी बहुज्ञता, हठयोग, रसायन आदि का सविस्तार चर्चा करते है और शायद इसी कारण कतिपय आलोचक इसे 'झूठा रहस्यवाद' घोषित करते हैं और जायसी के 'झूठे रहस्यवाद' में आ फँसने के कारण खिन्न भी होते हैं, परन्तु यह आलोचना ठीक नहीं है, क्योंकि जायसी के मूल रहस्यवाद से इन बातों का कोई विरोध नहीं है। अपनी विलक्षण और अपूर्व प्रतिभा के द्वारा जायसी ने इनके मूलभूत सिद्धान्तों का अत्यन्त सरस और काव्यात्मक रूप में उपस्थित करने का सफल प्रयत्न किया है। ये चार प्रकार से अपनी रहस्यदर्शिता की अभिव्यक्ति में सफल हुए हैं–

(1) रूप–वर्णन के द्वारा – सूफियों ने प्रेम–तत्व के उदय का मूल कारण सौन्दर्य तत्व कहा है। रुमी हब्रूनेनिया और जायसी ने जिस सौन्दर्य–तत्व के आध्यात्मिक पक्ष का उद्‌घाटन किया है वह रहस्यवाद के अंतर्गत आता है : सूफियों ने आध्यात्मिक सौन्दर्य की व्यंजना के लिए लौकिक सौन्दर्य का आश्रय लिया है। जायसी के लिए भी अलौकिक आध्यात्मिक सौन्दर्य की व्यंजना के लिए लौकिक सौन्दर्य का वर्णन करना और 'परदे–बुतां में नूरे खुदा' देखना अनिवार्य और आवश्यक था।

पद्मावती का रूप–वर्णन करते समय जायसी अब पाने पर परोक्ष सत्ता की ओर संकेत करने में नहीं चूकते। जैसी तुलसीदास रामचरितमानस के पाठकों को बार–बार राम के परमब्रह्मपरमेश्वरतत्व की याद दिलाते चलते हैं, ठीक वैसे ही जायसी अवसर मिलते ही परमसत्ता के रूप–सौन्दर्य के सृष्टिव्यापी प्रभाव और लोकोत्तर कल्पना की स्मरणीय अभिव्यक्ति द्वारा पाठकों की ज्योति–रस प्लावित करते चलते हैं।

जायसी प्रेम और सौन्दर्य के विशिष्ट रहस्यवादी कवि है। अंग्रेजी में रोजेटी, शेली, ब्राउनिंग आदि सभी इसी प्रकार के रहस्यवादी है। रोजेठी की रहस्याभिव्यक्ति में प्रेम के वासनात्मक स्वरूप की भी यत्र–तत्र अभिव्यक्ति मिलती है। शैली को सौन्दर्य में विश्वास था और जायसी भी उसी आदर्श सौन्दर्य के उपासक थे। शेली के 'हिम टू इन्टेलेक्चुअल ब्यूटी' में इसी आदर्श सौन्दर्य की अभिव्यक्ति की गई है। जायसी के सौन्दर्य–चित्रण में और ब्राउनिंग के सौन्दर्य चित्रण में यह समानता है कि वे दोनों कवि के समस्त पदार्थों में ईश्वर के दर्शन करते हैं। दोनों ने प्रेम को जीवन का मूलतत्व माना है।

विरह वर्णन के प्रसंगों की उद्भावना के द्वारा भी जायसी ने रहस्यात्मयी सत्ता की अभिव्यक्ति की है। सूफी साधना में आध्यात्मिक विरह का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। यदि विरह नहीं है तो जप, तप, धर्म, नेम आदि सब व्यर्थ हैं।

आस्तिकता, जागरण की स्थिति आंशिक अनुभूति की स्थिति विरहावस्था के मिलन पूर्व की स्थिति और साक्षात्कार या तादात्म्य की स्थिति के अत्यन्त मनोरम चित्र प्रस्तुत किए है। अनेक रूपकों, प्रतीकों और अन्योक्तियों ने इन चित्रों में प्रभविष्णुता और तीव्र प्रभावाभिव्यंजना शक्ति के आकर्षण भर दिये है। इसके अतिरिक्त विरह वर्णन, सूक्ति के माध्यम से, अलंकारिक वर्णन के माध्यम से कवि ने रहस्यवाद को अभिव्यक्त किया है।

चतुर्थ अध्याय :

मूल्यों का मानवीय संदर्भ, में प्रेम को सामाजिक मूल्य के रूप में दर्शाया गया है। जायसी ने व्यापक प्रेम की अभिव्यक्ति को निरन्तर दोहरे स्तर पर व्यंजित किया है। जायसी की मूल साधना प्रेम की भूमिका पर प्रतिष्ठित है। जायसी की यह साधना–भूमि मानवीय भाव–स्तर को समाहित करती है, किसी सिद्धान्तपरक दृष्टि पर उसका बलाघात नहीं है। इस प्रकार कवि के लिए प्रेम मनुष्य का केन्द्रीय भाव–तत्व है, जिसमें कई स्तर लक्षित होते है और जो मानवीय मूल्यों के आयामों को समाहित करता है। यह प्रेम की साधना मूलतः सभी भक्त कवियों की मूल दृष्टि है और जैसा उनके विवेचन से लक्षित होता है, इन सभी कवियों की प्रेम–साधना में मानवीय आदर्शों तथा मूल्यों को व्यंजित किया गया है, परन्तु जायसी समग्रतः प्रेम को जीवन की गहरी मूल्यदृष्टि के रूप में व्यंजित करते हैं। इस कारण साधना के साथ प्रेम मनुष्य के मूल्यों का व्यापक आधार बनकर यहां प्रस्तुत हुआ है। इस प्रकार के अनेक उद्धरण मिलते हैं, जिनमें प्रेम–तत्व मनुष्य के मूल्यों का मार्ग प्रशस्त करता है। कवि जायसी अपने को प्रेम का कवि मानते हैं। प्रेममय काव्य सुनकर करूण भाव जाग्रत होता है, जो हृदय के भण्डार में रत्न रूप है। कवि इस रत्न–पदार्थ (रत्न और पद्मा) के गीत गा रहा है, जिसमें अनमोल प्रेम का मधु भरा है। इस बोल (गीत–काव्य) में विरह का भाव है। निश्चित ही कवि प्रेम को परममूल्य के रूप में स्वीकार करता है, जिसमें अन्य मूल्य तथा मानवीय आदर्श समाहित हैं। पद्मावती हीरामन तोते से प्रेम को धर्म स्वीकार करती है और कहती है, 'यह धर्म प्रेम करने वाला कौन मर सकता है ? वह प्रीति कैसी जो शरीर के साथ विदा हो जाय। प्रीति वही सच्ची है जो प्राणों के साथ जाती है।' कवि मूलतः प्रेम के व्यापक मानवीय मूल्य को व्यंजित करता है, यह अवश्य है इस प्रकार की अभिव्यक्ति में साधनापरक प्रेम की अनुगूँज भी सुनाई पड़ती है। इसी प्रकार सुआ राजा से कहता हैं, 'प्रेम मार्ग कठिन है, मनसूर इस मार्ग में सूली पर चढ़ा। काम, क्रोध, तृष्णा, मद और मोह ये

पांच चोर शरीर को नहीं छोड़ते, इन्द्रियों की नौ सैंधो से ये चोर लूट मचाते है। मनुष्य को इनसे बचकर प्रेम मार्ग पर आगे बढ़ना है।' निश्चित ही कवि यहाँ दोहरे स्तर पर प्रेम की अभिव्यक्ति करता है। साधना के संकेत के साथ प्रेम का मूल्यपरक मानवीय स्तर भी यहाँ व्यंजित है। इसके आधार पर कवि ने जीवन की सार्थकता को स्वीकार किया है।

पंचम अध्याय :

पंचम अध्याय में जायसी की सामान्य भाषा का रेखांकन लोक संस्कृति के आरेखन में किया गया है। जायसी की भाषा समन्वयशील है। उनकी प्रमुख भाषा अवधी है किन्तु उसमें दूसरी संस्कृतियों के शब्द भी मिले हुए हैं। विभिन्न संदर्भों यथा भोजन के वर्णन, उनके निर्माण की विधि, वस्त्रों के प्रकार, उनके पहनने का तरीका, देवापासना, त्योहार और उनके अवसरों पर होने वाले मनोरंजन के वर्णन में सामान्य, शब्दावली का प्रयोग है। जायसी के इस शब्दावली से लोक बोध का परिचय मिलता है। उनकी शब्दावली में लोकसंवेदना सन्निहित है। महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि जायसी को लोक जीवन की निकटता उनको लोक जीवन से जोड़ती है। प्रबन्ध काव्य जीवन के महत्वपूर्ण भाग को साथ लेकर चलता है। लोक संस्कृति की शब्दावली जो लोक जीवन से ग्रहण की गई है उससे काव्य में माधुर्य आ गया है। जायसी का माधुर्य अवधी के मिठास का माधुर्य है।

सामान्य भाषा ही प्रयोग के मणिकांचन योग से काव्य–भाषा बन जाती है। अतः सामान्य भाषा काव्य भाषा की मूलधातु है।

षष्ठ अध्याय :

काव्य भाषा के विविध आयाम में जायसी के काव्य में काव्य भाषा के आयाम का विश्लेषण है।

अभिव्यक्ति आत्मा का शाश्वत गुण है। यह अभिव्यक्ति भाषा के माध्यम से सम्पन्न होती है और भाषा की निर्मित शब्दों से होती है। ये शब्द ही भाषा अभिव्यक्ति के प्रमुख साधन हैं। काव्य भाषा सामान्य एवं विशिष्ट दोनों प्रकार की शब्दावली से निर्मित होती है। सामान्य शब्दावली से व्यवहार का बोध होता है। विशिष्ट शब्दावली काव्य संवेदना में तीव्रता पैदा करती है जिससे बिंब प्रक्रिया सम्पन्न होती है।

जायसी की भाषा में प्रयुक्त शब्दावली के वर्गीकरण के साथ ही शब्दों के स्रोतों पर भी अनुसंधान किया गया है मध्यकालीन भाषा के आधारों को प्रस्तुत किया गया है इस अध्याय में शब्दों के प्रयोग के उन स्थलों का उल्लेख किया गया है।

अन्तिम अध्याय उपसंहार में समस्त अध्ययन के सार वस्तु का दिखाया गया है।

तत्वतः सम्पूर्ण अध्ययन में संवेदना एवं काव्यभाषा का अनुसंधान किया गया है।

—:: 0 ::—